सः एव महान् चित्रकारः

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» अमृत उद्यान का परिचय – विविध रंगों का बगीचा

» रंग-वाचक शब्द – हरितः, कृष्णः, रक्तवर्णः

» 'अस्य वर्णः कः?' – रंग पूछने का तरीका

» प्रकृति में रंगों का अवलोकन – पत्ते, पक्षी, फूल

» 'सः एव महान् चित्रकारः' – शीर्षक का भावार्थ

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. पाठ की पंक्ति 'रमणीयः निसर्गः विविधैः वर्णैः सर्वेषां चित्तम् आकर्षति' का शब्दार्थ करो।

› 'रमणीयः निसर्गः' = सुंदर प्रकृति

› 'विविधैः वर्णैः' = विभिन्न रंगों से

› 'सर्वेषां चित्तम् आकर्षति' = सबका मन आकर्षित करती है

उत्तर – अर्थ: 'सुंदर प्रकृति अपने विविध रंगों से सबका मन आकर्षित करती है।'

उदाहरण 2. पाठ में तीन जीव/वस्तु और उनके रंग बताए गए हैं – पर्ण (पत्ता), काकः (कौआ), जपापुष्पम् (गुड़हल)। हर एक का सही रंग-वाचक शब्द जोड़ो।

› पर्ण (पत्ता) का रंग हरितः (हरा)

› काकः (कौआ) का रंग कृष्णः (काला)

› जपापुष्पम् (गुड़हल) का रंग रक्तवर्णः (लाल)

उत्तर – पर्ण-हरितः, काकः-कृष्णः, जपापुष्पम्-रक्तवर्णः – तीनों सही जोड़े हैं।

उदाहरण 3. आकाश की ओर इशारा करके संस्कृत में प्रश्न बनाओ 'आकाश का रंग क्या है?' और मान लो उत्तर 'नीला' है, तो पूरा प्रश्न-उत्तर लिखो।

› 'आकाश' के लिए संस्कृत शब्द है 'आकाशः/नभः'

› प्रश्न-ढाँचा लगाओ: 'आकाशस्य कः वर्णः?' (आकाश का रंग क्या है?)

› उत्तर में सिर्फ रंग-शब्द दो: 'नीलः' (यह शब्द इस पाठ में नहीं आया, पर पैटर्न वही है)

उत्तर – प्रश्न: 'आकाशस्य कः वर्णः?' उत्तर: 'नीलः' (नीला रंग)।

उदाहरण 4. पाठ में बताए गए चार जीव/वस्तुओं में से हर एक का रंग बताओ – पर्ण, शुक (तोता), काक (कौआ), जपापुष्प (गुड़हल)।

› पर्ण (पत्ता) – हरितः (हरा)

› शुक (तोता) – हरितवर्णेन शोभते (हरे रंग से शोभित)

› काक (कौआ) – कृष्णः (काला)

› जपापुष्प (गुड़हल) – रक्तवर्णः (लाल)

उत्तर – पर्ण-हरा, तोता-हरा, कौआ-काला, गुड़हल-लाल – पाठ में यही चार उदाहरण दिए गए हैं।

उदाहरण 5. 'सः एव महान् चित्रकारः' शीर्षक में 'सः' (वह) शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है, और यह उपमा (रूपक) क्यों उचित है – दो कारण बताओ।

› 'सः' यहाँ प्रकृति/ईश्वर की ओर संकेत करता है, किसी मानव चित्रकार की ओर नहीं

› कारण 1: पूरे संसार में अनगिनत जीवों और वस्तुओं में अलग-अलग रंग बिना किसी मानव प्रयास के मौजूद हैं

› कारण 2: इतनी बड़ी विविधता और सुंदरता कोई मानव चित्रकार अकेले नहीं बना सकता, इसलिए यह उपमा उचित है

उत्तर – 'सः' प्रकृति/ईश्वर के लिए है; यह उपमा उचित है क्योंकि प्रकृति ने बिना ब्रश के असंख्य जीवों में अद्भुत रंग-विविधता भर दी है, जो कोई मानव चित्रकार नहीं कर सकता।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• पाठ की भूमिका (परिचय-अनुच्छेद) से जुड़े सवालों में जगह का नाम (अमृत उद्यान) और उसका स्थान (राष्ट्रपति भवन) दोनों सही-सही लिखना ज़रूरी है।

• रंग-वाचक शब्दों को हमेशा किसी वास्तविक वस्तु (पर्ण, काक, पुष्प) के साथ जोड़कर याद करो – अकेले शब्द रटने से जल्दी भूल जाते हैं।

• 'रंग पूछने का वाक्य बनाओ' जैसे सवालों में हमेशा वस्तु के नाम में षष्ठी विभक्ति (स्य/याः) जोड़ना मत भूलो – जैसे 'पर्णस्य' न कि सिर्फ 'पर्ण'।

• 'पाठ में क्या-क्या देखा गया' जैसे सवालों में पाठ के क्रम में ही उत्तर दो (फूलपत्तेपक्षीजानवर) – क्रम बदलने से जवाब अधूरा लग सकता है।

• शीर्षक का भावार्थ पूछे जाने पर हमेशा बताओ कि यह शब्दशः अर्थ नहीं बल्कि एक उपमा/रूपक है, फिर उसका गहरा भाव समझाओ – इससे पूरे नंबर मिलते हैं।

एक नज़र में रिवीज़न

› अमृत उद्यान = राष्ट्रपति भवन का बगीचा; प्रकृति विविध रंगों से मन आकर्षित करती है।

› हरितः = हरा, कृष्णः = काला, रक्तवर्णः = लाल – तीन मुख्य रंग-वाचक शब्द।

› '[वस्तु]स्य/अस्य वर्णः कः?' = इसका रंग क्या है? – उत्तर एक रंग-वाचक शब्द में।

› बगीचे में देखी गई चीज़ें: पुष्पाणि (फूल), पर्णानि (पत्ते), खगाः (पक्षी), जन्तवः (जानवर)।

› 'सः एव महान् चित्रकारः' – प्रकृति/ईश्वर के लिए रूपक, जो बिना ब्रश के संसार में रंग भरता है।